विभिन्न धर्मों और वगों को एक सूत्र में बांधने के लिये मुगलशासक अकबर की भूमिका

डॉ. (श्रीमती) विनीता यादव
एसोसिएट प्रोफेसर (चित्रकला)
दाऊदयाल महिला महाविद्यालय, फिरोजाबाद

आगरा नगर के प्राचीन भवनों में हिन्दू–मुस्लिम वास्तु शैली के समन्वय से ऐसी इमारतों का निर्माण हुआ जो आगरा नगर के ही नहीं अपितु समूचे राष्ट्र की धरोहर बन गयी। मुगलों से पूर्व भारत में जो मुस्लिम सल्तनतें थीं उन्होंने भी स्थापत्य के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण योगदान दिया। मुगलकाल से पूर्व भारत में मस्जिदों, विजय स्तम्भ व शाही निवास स्थानों आदि का निर्माण हुआ था किन्तु व्यवस्थित रूप में भवनों, किलों आदि का निर्माण अकबर के समय से ही आरम्भ हुआ। अकबर के युग के स्थापत्य से उसके साहस, विशाल योजनाओं तथा महत्वाकांक्षाओं आदि का ज्ञान होता है।

जहॉगीर ने सिकन्दरा में अकबर के मकबरे की आखिरी मंजिल, एत्माद–उद–दौला का मकबरा तथा आगरा किले के शीशमहल आदि का निर्माण कराया। इस काल में संगमरमर का प्रयोग आरम्भ हुआ तथा जड़ाव में बहुमूल्य पत्थरों का प्रयोग शुरू हुआ। शाहजहॉ के पश्चात् औरगंजेब के युग में जिस वास्तु शैली का विकास हुआ उसमें शक्तिमत्ता का प्रभाव नहीं है। इस प्रकार का नाजुकपन निरन्तर बढ़ता चला गया है। ताजमहल के अनुकरण पर बनाये गए। मुस्लिम वास्तु कला जो कि मध्य एशिया में विकसित हुई थी, ट्रांस आक्सीनियॉ, ईरान, अफगानिस्तान, मैसोपोटामियॉ, मिश्र, उत्तरी अफ्रीका तथा दक्षिण–पश्चिम योरूप के देशों में लोक प्रचलित कलाओं के सम्मिलन से विकसित हुई थी। तुर्को द्वारा भारत में जो वास्तु कला लायी गयी थी, उसके प्रमुख लक्षण 1. गुम्बद 2. ऊॅची अट्टालिकायें 3. महराव 4. महरावी छत थे। मुस्लिम वास्तु कला में हिन्दू वास्तु कला से निरन्तर मिश्रित होती रही तथा सबसे अधिक सम्मिश्रण अकबर काल में हआ। जैसा सोचा विचारा संगत सम्मिश्रण आगरा तथा फतेहपुर सीकरी में मिलता है वैसा भारत में कहीं भी नहीं मिलता है। इस्लामी वास्तुकला जो कि विभिन्न इस्लामी देशों में प्रचलित वास्तु कला के इस्लाम के नियमानुसार अधिग्रहण से बनी थी। ज्यामितीय डिजायनों के विविध रूपों का श्रेय ग्रीक गणितज्ञों को जाता है। ग्रीक गणित जो कि ज्यामितीय तक ही सीमित था। दर्शन शास्त्र के साथ पढ़ाया जाता था। दर्शन तथा ज्यामितीय संयोजन से इस्लामी वास्तु में अलंकरण के लिए विविध ज्यामितीय नमूनों का विकास हुआ। इस्लामितीय अलंकरणों के ज्ञान का श्रेय पाइथागोरस तथा उसके शिष्यों के आध्यात्मिक विचारों को जाता है। पाइथागोरियनों के अनुसार पिरामिड, अष्टभुज, क्यूब तथा विशफलक चार तत्व अग्नि, पृथ्वी, हवा तथा पानी के समतुल्य है। इन चारों को दो समकोण त्रिभुजों में ही घटाया जा सकता है। जिनकी भुजाओं की नाप का अनुपात 2 के वर्गमूल के 1:1 में तथा तीन के वर्गमूल के 1:2 में होता है। सुलेख अधिकतर अरबी में ही लिखा गया है क्योंकि कुरान की भाषा अरबी है तथा जहॉ भी सुलेख का प्रयोग हुआ है। वहॉ अधिकतर

कुरान की आमतें ही लिखी गयीं है। यह ताजमहल तथा सिकन्दरा में अकबर के मकबरे में देखने को मिलती हैं। विविधतायें मुगल भवनों में काफी देखने को मिलती है। क्योंकि इस्लाम में ऐसे अलंकरण के रूपों को बनाने में रोक नहीं थी। सभी भवनों के अवलोकन से प्रतीत होता है कि अकबर द्वारा निमित भवन लाल पत्थर के हैं। जहॉगीर काल अकबर के लाल पत्थर के युग से शाहजहॉ के संगमरमर युग की कड़ी है। जहॉगीर काल का एत्माद–उद–दौला का मकबरा ही एक ऐसी इमारत हैं। जिसका निर्माण संगमरमर में पहली बार हुआ था। यही नहीं कीमती पत्थरों से बुनाई का काम हुआ। शाहजहॉ के शासन काल में निर्मित सभी भवन संगमरमर के हैं तथा पिक्ट्रा ड्यूरा का काम भी इन भवनों में सर्वोत्कृष्ट है। आगरा किले की जहॉगीरी महल की सम्पूर्ण इमारत हिन्दू शैली की बनी है। फतेहपुर सीकरी का जोधाबाई का महल हिन्दू भवन जैसा लगता है। अन्य इमारतों में भारतीय तथा विदेशी शैलियों जैसे रानी तथा इटालियन पद्धतियों तथा भारतीय शैली में जैन कला का प्रभाव प्रमुख है। स्तम्भों तथा सिरदलों के तोरण आदि की अलंकरण प्रचुरता इसका लक्षण है। गुम्बद, नुकीले महराव वाले द्वारा जालीदार झरोखे, ज्यामितीय तथा वानस्पतिक अरवीसम, सूक्ष्म नक्काशी आदि फारसी प्रभाव हैं तथा रंगीन बहुमूल्य पत्थरों की बुनाई का काम और इटालियन पद्धति का अलंकरण आगरा के भवनों में मिलता है। मुगल भवनों से हिन्दू प्रतीकात्मक रूपकों को लेकर भी अलंकरण किया गया है। यह प्रतीकात्मक रूपक मुख्य रूप से मंगलकाश, पद्म चक्र, स्वास्तिक, श्रीवत्स, गवाक्ष आदि है।

भारतीय धर्म, दर्शन और संस्कृति के मूल उद्गम उपनिषद, गीता, महाभारत और रामायण के मूल विचारों को हृदयंगम कर अकबर ने उन पर गम्भीरता से मनन किया और फारसी में अनुवाद कराया। भगवदगीता का रज्यनामा के नाम से फारसी में अनुवाद कराया। प्राचीन हिन्दू मुख्य रूप से अपने मन्दिरों की वात्य तथा आन्तरिक सजावट के लिए मूर्तिकला तथा पत्थर की खुदाई पर ही आश्रित रहे, परन्तु मुगलों ने जो कि ज्यादा रंगीन सजावट में विश्वास करते थे, सजावट के वह सभी तरीके अपनाये जिन्हें मुलमान भारत में लाये थे। इस्लाम का अमूर्तिवाद में विश्वास है फिर भी अकबर ने चित्तौड़ विजय के बाद जयमल तथा फत्ता की हाथियों पर प्रतिमाएं बनावाकर फतेहपुर सीकरी में हाथी पोल दरवाजें के पास लगवायीं गयी थीं। आगरा किले में अपनी हिन्दू रानी के लिए कार्तिकेय की प्रतिया लगवाई थी। इसी प्रकार जहॉगीर ने जोधपुर के राणा अमर सिंह तथा उसके पुत्र कर्णसिहं की प्रतिमाएं हाथियों पर सवार बनवाकर आगरा किले में लगवाई थी। अकबर के द्वारा भारतीय राष्ट्रीय वास्तुकला के संगम का सुन्दर उदाहरण रहा है। इसका जहॉ सॉस्कृतिक पक्ष दर्शनीय है वहीं राजनैतिक पक्ष भी महत्वपूर्ण है जिस प्रकार मुगल शासक अकबर ने देश के विभिन्न धर्मो और वर्गो को एक सूत्र में बॉधने का प्रयत्न किया था उसी प्रकार यह भवन तत्कालीन कला शैलियों के उत्कृष्ट रूप में एक ही स्थान पर उभरकर आने में मुगलकालीन भवनों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया था।

मुगलशासक अकबर का सभी धर्मो के प्रति लचीलापन स्वभाव आज भी समाज में शान्ति व्यवस्था बनाये रखने के लिए प्रासंगिक है। मुगल शासक अकबर ने न केवल विचारों से सभी धर्मो का सम्मान किया बल्कि भवनों को भी हिन्दू रीति–रिवाजों द्वारा बनवाया जिसका साक्षात उदाहरण आगरा के फतेहपुर सीकरी में जोधाबाई महल में देखने को मिलता है। मुगल शासक का प्रभाव अफगानिस्तान, पाकिस्तान, ईरान, सऊदी अरब, संयुक्त अरब अमीरात,

मलेशिया, तुर्की तथा नाइजीरिया जैसे मुस्लिम बाहुल्य देशों पर भी पड़ा जिससे सभी धर्मो के लोगों का सॉस्कृतिक आदान–प्रदान होने लगा और विश्व शन्ति की डगर पर अग्रसर हुआ इसके विपरीत कुछ मुस्लिम कट्टर शासकों के कारण समाज में मुसिलम नियम–कानूनों का कठोरता से पालन करने से न केवल अशान्ति का माहौल बना बल्कि मानव के अधिकारों का हनन होने लगा और जनता उकताने लगी फलस्वरूप विभिन्न देशें एवं अन्तराष्ट्रीय संगठनों द्वारा मानवाधिकार आयोग का गठन करना पड़ा। आज अकबर का अन्य धर्मो के प्रति नजरिया एवं राष्ट्रपिता महात्मा गॉधी का अहिंसा मूल मन्त्र समाज में एकता एवं शान्ति बनाये रखने के लिए महामन्त्र के रूप में अपनाना जाना चाहिए।

आज हमारे समाज में मुख्य समस्या बेरोजगारी की होने के कारण हमारा रहन सहन भी प्रभावित हुआ है। जब हम जाति, धर्म तथा अन्य वर्गो में विभाजित रहेंगे तो निश्चित रूप से इस समस्या में वृद्धि होगी क्योंकि बहुत से कारखाने ऐसे है जो विशेष वर्ग के स्वामित्व में है। परिणाम स्वरूप यदि हम विभिन्न वर्गो में विभक्त रहेंगे तो निश्चित रूप से विशेष वर्गो को ही रोजगार देने का प्रयास करेंगे जिसका परिणाम हेागा कि कुछ वर्ग अपने मौलिक अधिकार से भी वंचित रह जायॅगे और असमानता की खाई को भविष्य में पाटना न केवल मुश्किल होगा बल्कि मानवता के खिलाफ होगा।

अतः हम इस निष्कर्ष पर पहुॅचते है कि जिस प्रकार मुगलशासक ने सभी धर्मो को सम्मान दिया और राज्य में एक ऐसा सन्देश देने का प्रयास किया कि जन सामान्य एक दूसरे की भावनाओं का सम्मान करते हुए अपनी मूलभूत आवश्यकताओं को पूर्णकर अपने रहन सहन को उच्च कोटि का बनाते हुए समाज में शान्ति का सन्देश जाये। अकबर सभी धर्मो के अच्छे विचारों से बहुत प्रभावित होता था और उन विचारों एवं भावनाओं को शासन स्तर पर लागू कर जनहित कार्य करता था।

नवम्बर, 1919 में महात्मा गॉधी द्वार हिन्दूओं और मुसलमानों का एक संयुक्त सम्मेलन खिलायत के प्रश्न पर विचार करने के लिए दिल्ली में बुलाया गया। सम्मेलन के सामने प्रस्तुत प्रश्न मुस्लिम विरोध का रूप निश्चित करना था। जिससे हिन्दू भी उसमें भाग ले सकें। अन्त में यह कार्य गॉधीजी ने तय किया। उन्होंने कहा कि जब ब्रिटिश सरकार अपने बादे से मुकर गयी है तो यह आवश्यक है कि हिन्दू और मुसलमान सरकार का सहयोग करना बन्द कर दें। देश को आजादी हासिल करने में सभी धर्मो, वर्गो आदि का सहयोग था। आज भी किसी कार्य को हम निश्चित रूप से पूर्ण कर सकते हैं चाहे वो कितना भी कठिन कार्य क्यों न हो इसके लिए हम सभी को मिलजुलकर धर्म, जाति से ऊपर उठकर रहने की आवश्यकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. शुक्ला, डी.एस. वास्तु शास्त्र, वाल.प्रथम, लखनऊ 1960
2. श्रीवास्ताव, हरिशंकर, मुगल शासन प्रणाली, नई दिल्ली, 1976
3. सिंह, कु. नटवर, महाराजा सूरजमल, अनुवाद वीरजी, नई दिल्ली 1985
4. वर्मा, रामचन्द्र (सम्पादक) – मानस शब्द कोष, हिन्दी साहित्य सम्मेल प्रयाग
5. गुप्ता, रामप्राण, मुगल राजवंश
6. अग्रवाल, वी.एस., चक्रध्वज, (वाराणसी 1964)